PAPER-3, UNIT-3

SUGAR INDUSTRY OF INDIA

कृषि से प्राप्त कच्चा मालों पर आधारित उद्योग में सूती वस्त्र उद्योग के बाद चीनी उद्योग सबसे बड़ा संगठित उद्योग है जो कि धीरे-धीरे उत्तर भारत से विकेन्द्रित होकर दक्षिण भारत में विकसित कर रहा है। चीनी उद्योग का कच्चा माल 'ईख' एक weight loosing पदार्थ है जो कि उष्ण कटि-बंधीय पौधा है। इसमें संदेह नहीं कि भारत विश्व का सबसे बड़ा गन्ना उत्पादक देश है। लेकिन चीनी उत्पादन में भारत का स्थान क्यूबा के बाद दूसरा है। यहाँ चीनी मिलों की कुल संख्या 330 हो गई हैं जिसमें लगभग 286000 श्रमिक कार्य करते हैं और गन्ने की खेती पर लगभग 2 करोड़ किसानों एवं उनके परिवार की जीविका निर्भर है।

विकास (Growth) :- एक कथन के अनुसार भारत ही गन्ने का जन्म स्थान है और यहाँ प्राचीन काल से ही शक्कर बनाने की प्रथा प्रचलित है। यद्यपि आधुनिक ढंग से शक्कर बनाने का उद्योग 20 वीं शताब्दी से ही उन्नत हो पाया है लेकिन इसके पूर्व में 1841-1842 में उत्तरी बिहार में डच लोगों के द्वारा तथा 1899 में अंग्रेजों द्वारा शक्कर फैक्ट्रियाँ स्थापित करने के असफल प्रयास किए गए थे। इस असफलता का प्रधान कारण विदेशी-प्रतियोगिता था। 1903 ई० से इस उद्योग का वास्तविक विकास प्रारम्भ होता है। जबकि बिहार

एवं उत्तर प्रदेश के विभिन्न केन्द्रों पर चीनी मिलें खोली गई थी। लेकिन भारतीय चीनी उद्योग से कुल चीनी खपत आपूर्ति न होने के कारण विदेशी चीनी का आयात होता था। फलतः तीव्र स्पर्द्धा (देशी व विदेशी चीनी) चलती रही। इस कारण भारतीय चीनी उद्योग का उचित विकास नहीं हो रहा था। Tariff Board के 1931 के सिफारिश पर भारत सरकार ने 1932 ई० में इस उद्योग को संरक्षण (PROTECTION) प्रदान किया। 1932 के Sugar Protection Act के अनुसार भारत में आयात किए गए। विदेशी चीनी पर इतना कर लगा दिया गया कि वह देशी चीनी से स्पर्द्धा न कर सके। Protection के अंतर्गत एक कानून पास किया गया जिसके अनुसार सरकार द्वारा निर्धारित मूल्य से कम किसानों को गन्ने के लिए नहीं दिया जा सकता था। इस संरक्षण का प्रभाव चीनी उद्योग पर काफी अनुकूल पड़ा और शीघ्र ही गन्ना कृषि में अप्रत्याशित वृद्धि, चीनी मिलों की संख्या में वृद्धि परिणामतः उत्पादन में आश्चर्यजनक वृद्धि हुई, जिसका अनुमान निम्न तालिका से स्पष्ट है।

संरक्षण काल के अंतर्गत चीनी प्रयोग में विकास :-

वर्ष	चीनी मिलों की संख्या	चीनी उत्पादन (लाख टन में)
1931-32	31	1.38
1936-37	137	11.00
1950-51	140	14.83

इसी अप्रत्याशित वृद्धि के कारण चीनी प्रयोग को संरक्षण काल का शिशु कहा जाता है। 1950 में इस प्रयोग पर Tariff Board के आदेशानुसार संरक्षण उठा लिया गया। इस 18 वर्ष के संरक्षण में विदेशी चीनी का आयात घटता गया और देशी चीनी का उत्पादन बढ़ता गया। अंतत: संरक्षण काल ने भारत को एक महान चीनी आयातक से बढ़कर संसार का एक महान चीनी उत्पादक बना दिया गया।

योजना काल में विकास :-

1951 से 1980 तक विभिन्न 6: पंचवर्षीय योजनाओं में इस प्रयोग का विकास संतोष प्रद रहा। 1955-1956 में मिलों की संख्या 143 थी जिससे कुल चीनी का उत्पादन 18.56 लाख टन हुआ। द्वितीय योजनाकाल में सहकारिता के आधार पर चीनी मिलें खोलने के प्रयत्न हुए। उस समय भारत विदेशों को चीनी निर्यात करने लगा था। तृतीय योजना

काल (1961 - 1965) मे चीनी मिलो की उत्पादन क्षमता बढ़ाने मे सहकारी क्षेत्र का योगदान सर्वाधिक था। 1961 मे 2 लाख टन चीनी का निर्यात हुआ। 1970 - 1971 मे 215 मिल थे जिनकी उत्पादन क्षमता 35.8 लाख टन थी। तब से लेकर वर्तमान समय तक चीनी मिलो की संख्या और उत्पादन मे उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है। चीनी उद्योग की वर्तमान स्थिति निम्न तालिका से स्पष्ट है।

चीनी उद्योग की वर्तमान प्रगति :-

वर्ष	मिलो की संख्या	उत्पादन (लाख टन में)
1980 - 1981	315	51.92
1981 - 1982	320	84.38
1982 - 1983	323	82.32
1983 - 1984	326	58.89
1984 - 1985	330	59.85
1985 - 1986	341	61.74

Provisional Based on India 1984, P. 358

&

Economic survey 1984 P. 125

स्थानीयकरण & भौगोलिक वितरण :-

भारत में चीनी उद्योग का स्थानीयकरण सर्वप्रथम उत्तरी भाग मे हुआ। चूँकि चीनी उद्योग का कच्चा माल हृासने वाला पदार्थ गन्ना है। जिसके कुल वजन का मात्र 10% ही चीनी तैयार होता है। और 90% बेकार चला जाता है। फलतः ईंधन उत्पादन क्षेत्र मे ही कारखाना स्थापित करना पड़ता है। ताकि उत्पादन लागत कम पड़े। पुनः गन्ना कटाई के 24 घंटे के अंदर इसकी पेराई न हो तो चीनी की मात्रा और भी घट जाती है। इससे यह स्पष्ट होता है कि इस उद्योग के स्थानीयकरण मे कच्चे माल की स्थानीय प्राप्ति अत्यंत ही प्रमुख कारक है। इसी कारण चीनी की अधिकांश मिले उत्तर प्रदेश और बिहार मे पाई जाती है।

उत्तर भारत :→ विकास की सुविधाएँ

① गंगा इसकी सहायक नदियों द्वारा लाई हुई, मिट्टी मे उर्वरा शक्ति अधिक होने के कारण बिना सिंचाई के ही गन्ना उत्पादन संभव हो पाता है। जिससे उत्पादन लागत भी कम पड़ता है। और — कारखानों को सुविधापूर्वक कच्चे माल की प्राप्ति हो जाती है।

② कारखानों की स्थिति गन्ना उत्पादक क्षेत्रों मे होने के कारण 24 घंटे के अंदर ही गन्ना की पेराई हो जाती है जिससे गन्ना सूख भी नहीं पाता है साथ दूरी कम होने के कारण परिवहन व्यय भी सस्ता पड़ता है।

(3) रेल, रोड आदि की उत्तम व्यवस्था है फलतः सामान मँगाने और भेजने में सुविधा होती है। तथा निकटवर्ती क्षेत्र से कोयला या तराई इलाको से लकड़ी (ईंधन हेतु) मगाँने मे सुविधा होती है

(4) घनी जनसंख्या वाला प्रदेश होने के कारण पर्याप्त संख्या मे सस्ते मजदूर आसानी से मिल जाते हैं साथ ही चीनी की खपत होती है।

(5) चीनी मिलो में जल की आवश्यकता नहरे और नलकूपो द्वारा पूरी की जाती है।

(6) उत्तर-भारत में विस्तृत समतल भूमि पर गन्ना उत्पादन का विशाल मेखला है।

दक्षिण भारत :→ विकास की सुविधाएँ

(1) यहाँ की उष्णार्द्र जलवायु गन्ने की खेती के लिए उपयुक्त है विशेषकर मोटे गन्ने की जिसमें अपेक्षाकृत अधिक रस, मिठास और चीनी का अंश मिलता है। समुद्री हवाएँ भी पौधे मे रस भरने में सहायक होती है। यह लाभ उत्तरी भारत को समुद्र से दूर होने के कारण नही मिलता। इस कारण उत्तर भारत की अपेक्षा गन्ने की उपज द० भारत में दूना है।

(2) उत्तर भारत मे गन्ने से चीनी की उपलब्धि जहाँ 10% तक ही हो पाती है द० भारत मे यह 12% तक होती है।

(3) द० भारत में सिंचाई की सुविधाएँ बढ़ गई है, लाल ही काली मिट्टी जैसे उपजाऊ प्रदेश और पाले के दुष्प्रभाव से सुरक्षा के कारण पौधो की कटाई 8

मीटर तक होती हैं।

(4) गन्ने की पेराई उत्तर भारत में जहाँ सिर्फ फरवरी से अप्रैल तक सीमित है द० भारत में यह वर्ष भर चलती रहती है।

(5) द० भारत में विशेषकर महाराष्ट्र में कारखाने के समीप से ही गन्ना मिल जाने से परिवहन व्यय बच जाता है।

(6) द० भारत में जल विद्युत शक्ति का विकास अधिक हो जाने से यह आसान से प्राप्त हो जाता है।

———:0:———